तेजपुर विश्वविद्यालय में "एशियाई जीवन, साहित्य एवं कला में राम" विषयक त्रि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी सम्पन्न

तेजपुर, 23 नवंबर, तेजपुर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा 'एशियाई जीवन, साहित्य एवं कला में राम (पूर्वोत्तर भारत के विशेष संदर्भ में)' विषय पर आयोजित त्रि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी बुधवार को अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुई। यह संगोष्ठी अयोध्या शोध संस्थान, अयोध्या, उत्तर प्रदेश तथा हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम के संयुक्त तत्वावधान में एवं वाणी न्यास, नयी दिल्ली के सहयोग से आयोजित की गयी थी। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में तेजपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मदन मोहन शर्मा, विशिष्ट अतिथि के रूप में अयोध्या शोध संस्थान के निदेशक योगेंद्र प्रताप सिंह, वाणी न्यास के अध्यक्ष अरुण माहेश्वरी, एकशरण भगवती धर्म के आचार्य श्री दयाल कृष्ण बोरा, उत्तर कमलाबाड़ी सत्र के सत्राधिकार श्री जनार्दनदेव गोस्वामी, हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो.अनंत कुमार नाथ, एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी, संगोष्ठी के संयोजक डॉ. अनुशब्द, विभाग की अतिथि अध्यापिका डॉ. चारु गोयल सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अध्यापकों, देश-विदेश से आए अनेक विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति रही।कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वलन, सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत से हुई।अतिथितियों के सम्मान के बाद डॉ. अनुशब्द की वाणी प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित तीन पुस्तकों- लोक और शास्त्र: जनजातीय साहित्य, पूर्वोत्तर भारत का जनजातीय साहित्य, कार्टून पत्रकारिता: स्वर और संधान का विमोचन हुआ साथ ही 'शोध सारांशिका' का भी लोकार्पण किया गया।

उदघाटन समारोह में अपना बीज वक्तव्य रखते हुए डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह ने कहा कि 'राम' केवल हमारी धार्मिक आस्था के आधार नहीं बल्कि हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के मूल हैं।

मुख्य अतिथि के रूप में अपने वक्तव्य में तेजपुर विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय ने कहा कि असम में 'राम' का इतिहास काफी पुराना है और यहाँ के समाज में भी 'राम' के आदर्श की गहरी छाप है।

उदघाटन सत्र में संगोष्ठी का परिचय देते हुए संगोष्ठी के संयोजक डॉ. अनुशब्द ने सबसे पहले तो प्रायोजकों के प्रति का आभार प्रकट करते हुए कहा कि इनके सहयोग के बिना इस संगोष्ठी की परिकल्पना तक संभव नहीं थी। आगे उन्होंने कहा कि भारतीय समाज में 'राम' रोम-रोम में रमे हुए हैं और राम का संबंध किसी धर्म या संप्रदाय विशेष से नहीं है। जहाँ भी मानवीय मूल्य है, मर्यादा है वहाँ राम हैं। आज के सांस्कृतिक विलंबन के दौर में तो राम पर चर्चा- परिचर्चा अपरिहार्य है, अनिवार्य है। अंत में उन्होंने यह भी कहा कि यह संगोष्ठी राम पर कम, रामत्व पर ज्यादा केंद्रित है।

उद्घाटन सत्र के उपरांत पहले दिन कुल तीन समानांतर सत्र आयोजित किए गए,जिसमें विभिन्न प्रतिभागियों ने शोधपरक पत्रों के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन के प्रथम सत्र की अध्यक्षता उत्तर कमलाबाड़ी सत्र के सत्राधिकार श्री जनार्दन देव गोस्वामी जी ने की। इस सत्र में विशिष्ट वक्ता के तौर पर तेजपुर विश्वविद्यालय के संस्कृति अध्ययन विभाग की सहायक प्रवक्ता डॉ. मौसूमी कंदली उपस्थित रहीं। सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री जनार्दन देव गोस्वामी ने सर्वप्रथम 'जय गुरु शंकर' गुरु वंदना से उपस्थित सभासदों का धन्यवाद किया और कहा कि राम एक

आदर्श पुरुष हैं तथा मानवीय मूल्यों के स्थापनकर्ता हैं। उन्होंने अपने भाषण में यह भी कहा कि राम को सिर्फ अपने आराध्य भगवान के रूप में न लेकर एक आदर्श के रूप में वर्तमान समय में लिया जाय तो अच्छा होगा। द्वितीय सत्र में विशिष्ट वक्ता के रूप में थाईलैंड की प्रोफेसर चर्या धर्म बून ने अपने वक्तव्य में थाईलैंड में रामकथा की विस्तृति और इसके स्वरूप का विवेचन किया। इसके पश्चात प्रतिभागियों द्वारा शोध पत्रों का पाठ किया गया। इसी सत्र में वाणी न्यास के अध्यक्ष अरुण माहेश्वरी जी ने अपना सारगर्भित वक्तव्य रखते हुए संगोष्ठी की सफलता के पीछे तीन कारण गिनाये- जन जीवन में राम का महत्व, इस संगोष्ठी के आयोजक डॉ. अनुशब्द का परिश्रम एवं देश विदेश से आए सुधीजन। उन्होंने तुलसीदास की रामकथा से लेकर माजुली की मुखौटा कला पर अपना मत दिया और कहा कि धर्म और संस्कृति में अंतर है। अतः यहाँ सांस्कृतिक राम ही विवेचनीय है।डॉ. जोराम आनिया ताना ने अरुणाचल में राम की उपस्थिति पर प्रकाश डाला और बताया कि राम जनमानस में मौखिक रूप में विद्यमान हैं। अपने भाषण के दौरान उन्होंने खामती जनजाति, तावांग निवासी जनजातियों में राम की उपस्थिति पर प्रकाश डाला, साथ ही संगोष्ठी को सांस्कृतिक संदर्भ में महत्वपूर्ण बताया। त्रिपुरा विश्वविद्यालय की मिलन रानी जामतिया ने 'कॉकबरक भाषी लोकजीवन में राम' विषय पर अपना व्याख्यान दिया।

तृतीय सत्र के अध्यक्ष हैदराबाद विश्वविद्यालय के प्रो. गजेंद्र कुमार पाठक ने तुलसी के राम विषय पर चर्चा की। श्रीलंका की आमिला दमयंती ने 'श्रीलंका की मंचीय रामलीला पर' अपने विचार रखे साथ ही वहाँ की प्रचलित नूर्ती नाट्यकला के बारे में विस्तार से समझाया। सभा के समक्ष अपनी मधुर वाणी में इन्होंने रामचरित मानस की कुछ चौपाइयों का गान भी किया। शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के डॉ. सुनील तिवारी ने 'भोजपुरी लोकजीवन में राम' विषय पर अपनी बात रखते हुए बताया कि राम का स्वरूप किताबों में जितना दर्ज है उससे कहीं अधिक जीवंत रूप में लोकजीवन में उपस्थित है।

दूसरे दिन के चतुर्थ सत्र के अध्यक्ष के रूप में डॉ सुनील तिवारी एवं वक्ता के रूप में श्री ललित शर्मा जी उपस्थित रहे। श्री ललित शर्मा जी ने छत्तीसगढ़ की स्थापत्य एवं मूर्तिकला में राम विषय पर अपने विचार रखे।

संगोष्ठी के तीसरे दिन के पहले दो सत्रों में शोधपत्रों का पाठ हुआ तथा भोजनावकाश के पश्चात समापन सत्र प्रारम्भ हुआ। समापन सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में हमारे बीच उपस्थित रहे दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रो. चन्दन कुमार तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में तेजपुर विश्वविद्यालय के परीक्षा नियंत्रक डॉ. एल. बोराल और संयुक्त कुलसचिव सभा की गरिमा बढ़ायी। डॉ. बोराल ने कहा कि राम की कथा बहुत प्राचीन है। राम के चरित्र, जीवनशैली का प्रभाव हमारे समाज में बहुत अधिक है। आज समाज में संवेदनाओं की कमी होती जा रही है। ऐसे समय में राम का चरित्र नैतिक पतन की ओर जा रहे समाज के लिए नैतिक स्तम्भ का काम कर रहा है। मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रख्यात

प्रोफेसर डॉ. चन्दन कुमार कि राम हमारे जीवन के संदर्भ हैं। हम anti-heroism के समय में जी रहे हैं और ऐसे समय में यदि समाज में नायकत्व की संभवना अभी बची हुई है तो राम की वजह से, उनके आदर्शों एवं मूल्यों की वजह से। आगे उन्होंने यह भी कहा कि राम हमारा सपना है। हिन्दी का साहित्यिक जगत तुलसी और राम के बिना पूरा नहीं होता। तुलसी और रामत्व इस सभ्यता के प्रस्थान बिन्दु हैं। पूर्वोत्तर भारत के इस राज्य में ज्ञान का सूरज निकला है और यह संगोष्ठी इस बात का प्रमाण है। अपने से इतर और बेहतर लोगों से संवाद स्थापित करती हैं ऐसी संगोष्ठियाँ। यही इस संगोष्ठी की प्रासंगिकता है। संगोष्ठी का समापन डॉ. चारु गोयल द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुति, डॉ. अनुशब्द द्वारा धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। अंत में राष्ट्र गान के उपरांत संगोष्ठी के समापन की घोषणा हुई।

शुभकामनाएं।

विभागाध्यक्ष,
हिंदी विभाग

Head,
Department of Hindi
TEZPUR UNIVERSITY
Tezpur -784028